जन्म माह से भविष्य

13 अप्रैल से 12 मई

यह वह समय हैं जब सूर्य अपनी उच्च राशी मेष में रहता हैं। 28 मार्च तक आते आते सुर्य अपना संपूर्ण रूप प्रदर्शित करता हैं,इस समयावधि में उत्पन्न व्यक्ति निडर, साहसी, अभिमानी, हिम्मती, उदारमन होगा। धुन का पक्का, प्रबल इच्छा शक्ति और मनोबल युक्त जातक चुनौती का मुकाबला सीना ठोककर करते हैं, उससें घबराकर पीछें नहीं हटते।यह उनका सर्वप्रमुख गुण हैं।जहां धर्म.कर्म में गहरी आस्था होती हैं वहीं कलात्मक अभिरूचि भी जाग्रत होती हैं। सौंदर्य की और विशेष झुकाव रहता हैं। जहां सुंदरता दिखी वहीं ये ठिठक जाते हैं।चातुर्य, कार्य, दक्षता, व्यवसाय कुशल के साथ .साथ दृढ़ता तथा दूसरे से मुकाबला करने की अद्‌भुत क्षमता इनमें रहती हैं। सरकारी विभाग आपके लिए विशेष शुभ व अनुकूल हैं। खेलकूद, शिकार, के शौकीन एवं हुकूमत करने या मशीनी कार्य करने का विशेष शौक रहता हैं।

आपका जन्म ईस अवधि में हुआ हैं, तो आपमें उपरोक्त गुण अवश्य पाए जाते हैं। आप में अद्‌भुत संगठन करने की शक्ति हैं। आप शक्ति के उपासक एवं बहादुर होगे। जिस काम को एक बार हाथ में ले लिया, उसे पूरा कर के छोड़ेगे। उतरदायित्व को निभाने वाले उच्च पद पाने की प्रबल इच्छा आपकी रहेगी। आप अपनी योजनाओं में किसी का हस्त क्षेप पसंद नहीं करते, व्यर्थ तर्कबाजी में भी उलझते नहीं हैं। दूसरों के सुझााव सलाह निर्देश भी पसंद नहीं। धार्मिक व राजनैतिक रूप से आप खूब भावुक हैं। उस भावुकता पर नियंत्रण नहीं रख सकते। आर्थिक रूप भी प्रायः अस्थिर रहता हैं। क्रोध शीघ्रआ जाता हैं, और फिर शीघ्र शांत हो जाता हैं। क्रोध ईर्ष्या व दुशमनी की और ले जाता हैं। कार्य करने में जल्दबाज, कठोर स्वा भाव में आप कार्य करना चाहते हैं, पर परिणाम की और नहीं देखते, यह आपके लिए ठिक नहीं होता। छोटी सी बात से आप मित्रता को शत्रुता में बदल देते हैं। गृह कहल व अशांति का कारण प्रायः आप माने जाते हैं।

जमीन जायदाद का सुख जीवन में अवश्य प्राप्त होता हैं। स्त्री वर्ग से आपको आर्थिक लाभ भी प्राप्त होता हैं। व्यापार में साझेदारी से अधिक उीम लाभ प्राप्त करेंगे। बाल्यावस्था कठिन रह सकती हैं, भाई बहन का सुख नहीं के बराबर हो सकता हैं। मित्रता व शत्रुता दोंनो तुरंत होती हैं, इतने पर आपका मित्र समुदाय खूब बढ़ा–चढ़ा होता हैं, शत्रु प्रायः दबकर ही रहते हैं, पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अहित करने का प्रयास करते हैं। आपको ससुराल पक्ष सें भी लाभ प्राप्त हो सकता हैं। आपको 6,16,19,30,44 वें वर्ष जीवन में कष्टप्रद, क्लेश कारक या रोग कारक हो सकते हैं, अतः सावधान रहने का प्रयास करे। विवाह सामान्यतः अल्पायु में होगा, संतान सुख भी विशेष नहीं रहता। संघर्षरत रहकर आप उच्च पद प्राप्त कर सकते हैं। सिर दर्द, ज्वर या सिर पर चोट लगने की आशंका रहती हैं। पेट विकार गुरदे की बीमारी और अधिक रक्त.चाप की आशंका होती हैं।

आपके बगल, मुठह या पाठव में काले तिल का चि-, निशान अवश्य होगा, 20 से 23 अप्रेल के मध्य जन्म लेने वाले उच्च पद अवश्य प्राप्त करते हैं। आप बुद्धिमान, बलिष्ठ, साहसी, आविष्कारी व धैर्यवान स्वाभाव के व्यक्ति होगें। भाग्योदय का समय प्रायः 25 से 28 वर्ष रहता हैं। 28 से 36 वर्ष के मध्य निरंतर उत्थान पतन के मध्य झुलते हैं, इस समय को सावधानी से व्यतीत करना आवश्यक होगा। सब मिलाकर 41 वर्ष तक की आयु का समय उलट–फेर देता रहता हैं।

लाल रंग, मंगल वार 9,18,27 तारीख 9,18,27,36,45,54,63,72 वें वर्ष शुभ सूचक, शुक्र वार अशुभता सूचक।जुलाई, अगस्त, नवम्बर, दिसम्बर माह शुभ फलदायक होता हैं। रत्न में मूंगा उत्तम।

13 मई से 14 जून

यह समय सूर्य वृष राशी पर रहता हैं, उस समय सूर्य किसी न किसी प्रकार मेष राशी का भी प्रभाव रखता हैं। सूर्य अपने पूरे प्रभाव में आता हैं। तथा 21–22 मई पूर्ण प्रभाव में रह कर क्षीण होने लगता हैं।
यक्ति घोर परिश्रमी, धैर्य लम्बे समय तक अपने कार्य में लगे ही रहते हैं, शांतचित्त, प्रायः क्रोध आता ही नहीं, परंतु क्रोध आने पर जल्दी शांत नहीं होता, क्रोध टिका रहता हैं। दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण हाथ में लिए कार्य को पूरा कर के ही छोड़ते हैं, बीच में अधुरा नहीं छोड़ते। किसी भी तरह अपने उद्‌देश्य को जीवन में पा ही लेते हैं।

आपको प्रशासनिक कार्य में खूब सफलता मिल सकती हैं। अनुशासन का पालन करने वाले, कृषि कर्म व बागवानी का शाख होता हैं। प्रेम के मामले प्रायः असफल रह ते हैं। दूसरों की प्रगति व उन्नति से स्वाभाविक ईर्ष्या होती हैं। अनियमित भोजन व आवश्यकता से अधिक परिश्रम करने से प्रायः रोग ग्रस्त रहते हैं। कठिनाइयों व विपत्ति के साथ पलते, जीवन के प्रारंभ में अत्यंत सामान्य आर्थिक स्थिति होती हैं, परंतु धिरे–धिरे परिश्रम के बल पर अपनी आर्थिक स्थिति सुधार लेते हैं। कार्य को आराम सें करते है। अपने भाग्य का निर्णय स्वयं ही करते हैं।

जीवन में मुकद्मेबाजी व षड्यंत्र आदि में फँसकर बार–बार हानि उठाते हैं। मित्र व स्नेही का भरपूर सहयोग मिलता हैं, उनके सहयोग से अधिक उन्नति होति हैं। यदि मध्य रात्रि के पश्चात और सूर्योदय से पूर्व का जन्म होने पर व्यक्ति के पिता समाज में प्रतिष्ठित व उच्च उत्तराधिकारी होगे। भाई व बहिनो से प्रायः कष्ट मिलता हैं। जीनव में लंबी–लंबी यात्राएं करते हैं। व्यक्ति को संतान पक्ष से सावधान रहना चाहिए। प्रथम संतान पुत्र हैं तो और भी ज्यादा सावधानी रखनी चाहिए। व्यक्ति को अचल संपत्ति, जमीन जायदाद प्राप्त होने का अवसर एकाधिक बार मिलता हैं, औरो के द्वारा बहुमूल्य जायदाद भी प्राप्त हो सकती हैं। परंतु षडयंत्र व मुकद्मेबाजी से हानि पहुँचने की संभावना रहती हैं।

ज्यादातर इस अवधि में जन्मे लोगो का मुंह गोल, कमर व पांव में काले तिल के निशान अवश्य होते हैं। जिस्से प्रेम करते हैं उसे अपना सर्वस्व लूटा देनेको तत्पर रहते हैं, पर प्रेम करने वाला उनका विश्वास तोड़ देता हैं। हदय या वायु रोग से जीवन में पीड़ा पाते हैं, गुर्दे कमजोर रहते हैं। 11, 23,36 वें वर्ष विशेष रोग कारक होते हैं। विवाहित जीवन भी संतोष पूर्ण नहीं होता।

जीवन में मित्रता व शत्रुता पूर्णतः स्पस्ट रहती हैं, शत्रुता करेंगेतो खुलेआम, षडयंत्र, दगाबाजी, झुठ, फरेब, चालबाजी से दुर रहने का प्रयास करते हैं। तीव्र स्मरण शक्ति के धनी। अध्ययन के प्रति विशेष रूचि, धर की सजावट व सौन्दर्य पर अधिक ध्यान दते हैं।

वस्त्र, सुगंधि वस्तु के व्यापार, कला संबधि कार्य में ज्यादा सफल प्राप्त होती हैं। मुख व नेत्र में दोष संभव। भोजन, वस्त्र व सुगंध के शौकीन, पर पानी से भय रहता हैं। सामान्य कारणो पर व्यक्ति मरने व मारने पर उतारू होजाता हैं। उसे अपने किए कार्य पर पश्चाताप होता हैं।

उत्पन्न स्त्री में मातृत्व शक्ति अधिक होती हैं। जरूरत से ज्यादा खर्च करते है। 21 से 28 वर्ष का समय विशेष आनंदमय होता हैं। पुनः 35 सें 42 वर्ष समय आर्थिक द्रष्टि से सर्वोतम होता हैं। शुक्रवार 6,15,24 तारीख, 6,15,24,33,42,51,68,78 वा वर्ष शुभत्व प्रदान करता हैं।

गुलाबी, आसमानी, नीला, सफेद, हलका पीला रंग उत्तम रहता हैं। रत्न में पन्ना उत्तम।

15 जून सें 15 जूलाई

प्रथम सप्ताह में वृष का थोड़ा प्रभाव बना रहता हैं, अतः मिथुन अयन का अपना पूरा प्रभाव नहीं देता। व्यक्ति मिलन सार व क्रोध समाप्त होने पर भारी पश्यताप करते हैं, विधा प्रेम व अध्ययनशीलता उनका प्रमुख गुण होता हैं। तीव्र व्यापारिक बुद्धि तथा अंतरमुखी प्रवृति व संगीत प्रमी। प्रथम सप्ताह में जन्म लेने वालो पर वृष अयन का थोडा थोडा प्रभाव बना रहता हैं अतः यह एक सप्ताह तक पूरा प्रभाव नहीं देता। व्यक्ति कष्ट सहने वाले होते हैं। आजीवन आर्थिक स्थिति में परिर्वतन होते रहते हैं। कभी खूब संपन्न तो कभी दरिद्र। पितृ पक्ष से कठिनाइयों का सामना करना पड़ता हैं। संतान पितृ द्वेषी होती हैं, कुटुंबी जनों से मनमेल नही रहता। प्रेम प्रसंग के मामले में दुःख कष्ट, परेशनी व निराशा होती हैं। प्रायः एक से अधिक विवाह होते देखे गए हैं, तथा इतर रोगात्मक संबध भी जुड़ते हैं। जहरीले जंतु, अकस्मात व मलेरिया जेसे रोग ज्यादा कष्ट देते हैं। शत्रु पक्ष की अधिकता बनी रहती हैं।

जीवन के मध्य काल में मार्ग में बाधाएं उत्पन्न होती हैं। मित्रवर्ग से विश्वासघात की निरंतर आशंका बनी रहती हैं। ससुराल, पड़ोसी, सहयोगी से षड्यंत्र रचते हैं। एक साथ एक से अधिक विचार उपस्थित होते हैं और ये विचारो परस्पर विरोधी होते हैं, इससे उनके दिमाग की अस्थिरता बढ़ जाती हैं। व्यक्ति में षड्यंत्रकारी विचार उत्पन्न होते हैं। भविष्य पूर्ण अंधकारमय लगता हैं, और किसी भी कार्य में सफलता नहीं के बराबर मिलतीहैं, कार्य के आरंभ से ही उस काम से मन उठ जाता हैं फलतः कार्य अधूरा रह जाता हैं।

व्यक्ति विद्वान, कुशाग्र बुद्धि व धनोपार्जन में कुशल होते हैं। उनमे अहंकार की अधिकता व बड़ो का आदर करना उन्हें अच्छा नहीं लगता। दूसरो की सहासता करने व सहानुभूति के लिए तैयार रहते हैं।शारीरिक श्रम ये नहीं कर सकते। बुधवार, शुक्रवार, सफेद, पीला, हरा, नीला रंग शुभ होता हैं। 5,14,23 तारीख शुभ एवं 5,14,23,32,41,50, 59,68,77 वें वर्ष उन्नति कारक रहते हैं, रत्न में पन्ना व हीरा उत्तम रहता हैं।

16 जूलाई से 16 अगस्त

इस समय सूर्य कर्क राशी में रहता हैं, प्रथम सप्ताह में मिथुन अयन थोड़ा प्रभाव बना रहता हैं, अतः कर्क अयन अपना पूरा प्रभाव नहीं देता।

व्यक्ति का हृदय कोमल होता हैं, पर हर छोटी–छोटी घ्टना बहुत बड़ा असर करती हैं। ये संवेदनशील व भावुक होते हैं, इन को कला से अच्छा लगाव होता हैं। ये बात के बड़े पक्के होते हैं तथा अपनी जिम्मेदारी को अच्छी तरह निभाते हैं। लोग उन पर आंख बंध करके विश्वास करते हैं। निः स्वार्थ कार्य करने वाले सर्व कार्य दक्ष पर अपने आप पर संदेह करने की प्रवृति से उदास होकर कार्य को रोक लेते हैं।

निरंतर क्रियाशील रहते हैं। ज्यादा आदर्श वादी होते हैं व स्वप्न लोक में ज्यादा सफर करने वाले होते हैं। व्यवहार में एक रूप ता नहीं रहती, कारण मानसिकता में चंचलता रहती हैं। जीवन में स्थिरता नहीं रहती व जीवन में कए कार्य को छोड़ कर दूसरे को अपना ते हैं। विवेकशील, स्वतंत्र विचार धारा व व्यापार कुशल होते हैं। धन व सम्मान के लिए सदैव उत्सुक बने रहते हैं। धर्म कर्म में सबसे आगे रहना उन्हें अच्छा लगता हैं। उनके प्रम में द्रढ़ता इमानदारी व पूर्ण व्यवहारू होती हैं। भाई बहनो का सुख भी नहीं मिलता। दांपत्य जीवन प्रायः सुखमय नहीं होता। पैतृक संपत्ति अवश्य प्राप्त होती हैं। जन्मजात परिश्रमी, लगनशील,दुरदर्शी व सुक्ष्म विचारो के धनी व स्वाभिमानी होते हैं। शत्रु भी प्रायः नीच व धूर्त होते हैं। आपका भाग्योदय यात्रा के द्वारा होता हैं। हर यात्रा शुभ व लाभकारक होती हैं। मित्र ज्यादा होने से मित्रो से ज्यादा लाभ नहीं होता। व्यक्ति अपना कार्य निकालने में कुशल व अपने बंधुओ की भर पूर सहायता करते हैं। वचन व निश्चय के पक्के व हर कार्य को पूरी लगन से करते हैं। व्यक्ति बड़े–बड़े कार्य को सफलतापूर्वक करते हैं व नाम–यश–ऐश्वर्य प्राप्त करते हैं। विश्वास घ्ात कारने वालो से जमकर बदला लेते हैं। व्यक्ति के प्रबलतम शत्रु भी गिड़गिड़ाने लगते हैं। गुप्त शत्रु अधिक होते हैं, जो विभिन्न प्रकार के षड्यंत्र द्वारा अहित करने का प्रयास करते रहते हैं। यात्राओं से धन नष्ट होने की संभावना रहती हैं। 14,26,30,64 वां वर्ष आर्थिक क्षति का रहता हैं। 21 से 26 वर्ष की आयु के मध्य रोग होने की संभावना होती हैं, तथा उदर व्याधि से पीड़ित रहते हैं। 45 सें 49 वर्ष के मध्य पेशाब संबंधि तकलीफ रहती हैं। फेफड़े व पेट संबंधित रोग पीड़ा देते हैं। 35 वर्ष के बाद जीवन में अच्छा परिवर्तन आता हैं और वही क्रम चलता रहता हैं। 30,32,40 वर्ष में शत्रु अवश्य हानि उठाते हैं अतः सावधान रहना चाहिए। विश्वासघ्ात इसी समय होता हैं। जीवन में शस्त्राघ्ात् अवश्य होता हैं। नाना प्रकार की व्यर्थ चिन्ता पीड़ित रहते हैं। जल संबधि कार्य से विशेष लाभ प्राप्त हो ता हैं। 21 सें 25 वर्ष के मध्य उन्नति के प्रयास करना चाहिए। 2,11,20,29,38,47द्व,56,65,74 वे वर्ष शुभ फलदायक होगे। रत्न में मोती, ओपल व हीरा शुभ रहता है।

17 अगस्त से 17 सितम्बर

प्रथम सप्ताह में कर्क अयन का थेड़ा प्रभाव बना रहता हैं। अतः सिंह अयन एक सप्ताह तक अपना पूर्ण प्रभाव नहीं देता हैं। उत्पन्न व्यक्ति निर्भय, निडर, साहसी, उदार, अभिमानी होते हैं। धैर्य सम्पन्न, न्यायप्रिय प्रायः कोध नही आता पर अनुचित होने पर अधिक आता हैं, व शीध्र शांत हो जाते हैं। यश व मान सर्वत्र पाने पर भी गृहस्थ जीवन कटूटा पूर्ण व कष्टमय होता हैं, जीससे मन–ही–मन धुटते रहते हैं। स्मरणशक्ति तीव्र, गुप्त अध्ययनरूचि विशेष रहती हैं। अपने वंश, गोत्र, जाती व समाज से भारी लगाव रहता हैं। ज्ञान तथा इन्द्रिय जनित सुखो से खूब लगाव होता हैं। धर को सजाने मे विशेष रूचि रखते हैं। जुआ, मटका, लाटरी आदि में अधिकतम नुकशान उठाते हैं। पवित्र आदर्श एवं सिद्धांतो पर चलने वाले, विवेकी, स्वतंत्र विचारो वाले, धार्मिक, सजग व कमाऊ होते हैं।

धन का संग्रह कठिनाई से करते हैं पर कुटुंबीजन व परिवार पर अन्धाधुन्ध व्यर्थ व्यय कर जाते हैं, अतः कष्ट महसूस करते हैं। जीवन में 40 वर्षायु के बाद अच्छा धन संग्रह कर लेते हैं। जहां अन्य कुटुंबीजनों से सहयोग मिलता हैं वहीं भाईयों से कहल बनी रहती हैं। संतान से चिन्ता व गृहस्थ जीवन बिखरा रहता हैं। युवावस्था में अपने कार्य व रख–रखव की बड़ी आलोचना होती रहती हैं। विवाह करना कम पसंद करते हैं और यदि विवाह कर भी ले तो पति–पत्नी में प्रायः वैचारिक मदभेद रहता हैं। जायदाद में अवश्य सफलता मिलती हैं। झगड़े व अदालती

कार्यवाही में व यात्राओं पर भी शत्रु सें हानी उठानी पड़ सकती हैं। सहानुभूतिपूर्ण, निश्छल, निष्कपट, सचचा व्यवहार एवं दानी, दयालु, परोपकारी, धर्मात्मा शिष्ट व आदर्शप्रिय होते हैं। अपने संपर्क में आए व्यक्ति को सदैव के लिए अपना बना लेते हैं। व्यवसाय में आपको खूब सफलता मिलती हैं। शीध्र विश्वासपात्र बनने वाले होते हैं। समाज का नेतृत्व करते हैं। अत्यंत भावुक, खेल–कूद के शैकीन कला प्रेमी सामाजिक कार्य करने वाले होते हैं। मध्य आयु में निमोनिया, हृदय की बीमारियां, कण्ठ, फेफड़े, रक्तचाप, मूर्च्छा रोग पैदा होते हैं। नशे की लत लगने पर शीध्र नहीं छूटती। आप खुशामद पसंद चापलूसी करने पर शीध्र प्रसनन होते हैं और हानी उठाते हैं। व्यक्ति में सच्चा प्यार पाने के लिए लालायित रहते हैं। बच्चोके प्रति उदार व विवाहोपरांत यश–मान धन की प्राप्ति होती हैं। बहुत जल्दबाज व प्रेम के शैकीन होते हैं। 28 से 36 वर्ष के मध्य कीर्ति चारों ओर फैलती हैं। सोम व मंगलवार शुभत्व देते हैं। पीला, नारंगी, हरा, नीला, सफेद रंग शुभ। रत्न में पन्ना, हीरा, नीलम, शुभ फलदायक होते हैं। 1,10,19,28 तारीख व 10,19,28,37,46,55,64 वें वर्ष भाग्यवृद्धि दायक होते हैं।

17 सितम्बर से 16 अक्टूम्बर

प्रथम सप्ताह में सिंह अयन का थोडा प्रभाव बना रहता हैं। अतः कन्या अयन अपना पूरा प्रभाव नहीं दिखा पाता। व्यक्ति स्वयं अपने परिश्रम से उन्नति करता हैं। न्यायशीलता व दयालुता इनके प्रमुख गुण हैं। कोई भी बात को ठंड़े दिमाग से सोचते हैं। विचारशीलता व बुद्धिमता खूब पायी जाती हैं। नम्रता व लज्जा विशेष गुण होते हैं। क्रोध प्रायः नहीं आता, परंतु क्रोध आने पर द्योर पश्चाताप भी होता हैं। कला से विशेष प्रेम रहता हैं। धन संग्रह की प्रवृति विशेष रहती हैं। अधिक शिक्षित लोगों में दार्शनिक व वैज्ञानिक अध्ययन के प्रति रूचि व तत्परता पाई जाती हैं। बाल्यावस्था में चोट लगने की संभावना रहती हैं। प्रारंभिक जीवन में आर्थिक सफलता कम प्राप्त होती हैं। सहसा हानि की भी पूरी संभावना रहती हैं। यात्राएं भागयोदय में सहायक होती हैं। भाई–बहनों का सुख न्युनतम प्राप्त होता हैं। अधिकतर लोगो के अन्यों से प्रेम संबंध होने से गृहस्थ जीवन टूटने की कगार पर सदैव रहता हैं। संतान पक्ष से भी निरंतर चिंता रहती हैं। व्यक्ति खूब बुद्धिमान, शांतिप्रिय, विचारशील व नम्र, जीवन में शारीरिक चोट लगने संभावना रहती हैं। दूसरा विवाह जीवन में होने की संभावना बनी रहती हैं व उससे जीवन में अनेक परिवर्तन होते हैं। प्रेम संबंधों के कारण पति–पत्नी तथा मित्र वर्ग के मध्य प्रायः झगड़े होते रहते हैं।

पैतृक संपत्ति प्रायः नहीं मिलती तथा मिलती भी हैं तो बार–बार की मुकदमेबाजी के बाद, नौकरी व व्यवसाय के लिए विदेश यात्राएं भी करनी पड़ती हैं। लेखनकला में रूचि रहती है व प्रसिद्ध होसकते हैं। तीव्र स्मरण शक्ति, सूक्ष्म दृष्टि तथा हर बात को म नही मन तर्क की कसौटी पर कसने के बाद ही वास्तविकता पर पहुंचते हैं। सहज में धोख नहीं खाते, नहीं देना पसंद करते हैं। चतुर, अनुशासन प्रेमी, नियम पालक, पूर्ण आत्मविश्वासी सतत उद्यमी, शांत, प्रदर्शन से धृण करने वाले, हर कार्य में लाभ ढूढंने वाले होते हैं।

समाज का नेतृत्व करने वाले, आदरणीय, सम्मानित, धार्मिक, वृद्धावस्था में व्यसनी होने की अधिक संभावना रहती हैं। शारीरिक श्रम से मानसिक श्रम आप अधिक कर सकते हैं। व्यवसाय के क्षेत्र में गलत तरीको से भी पैसा बनाना पसंद करते हैं। स्वास्थ्य कमजोर रहता हैं, भोजन के शैकीन होते हैं। फेफड़ो के रोगी, बांह तथा कंधो में सूजन, उदर विकार, स्वाभाविक दुर्बलता कष्ट देती हैं। 14 सें 21 वर्षायु के मध्य संसारिक उपलब्धियों की पूर्ति के लिए विभिन्न उद्यम, व्यवसाय कार्य करते हैं। बुधवार शुभ रहता हैं। अंगूरी, हरा, नीला, काला रंग शुभत्व देता हैं। 5,14,23 तारीख 14,23,32,41,50,59,68 वें वर्ष सौभाग्यवर्धक हैं।

17 अक्टूम्बर से 13 नवम्बर

प्रथम सप्ताह में कन्या अयन का थोडा प्रभाव बना रहता हैं। अतः तुला अयन अपना पूरा प्रभाव नहीं दिखा पाता। व्यक्ति के विचारो व कार्यो में प्रायः अनिश्चितता रहती हैं। परंतु दिमाग तीव्रतर रहती हैं। कला–विज्ञान एवं कर्म में व्यक्ति प्रवृत्त रहते हैं। आत्मिक शक्ति का अभाव होने से प्रत्येक कार्य अपूर्ण रह जाते हैं। जीवन के मध्य भाग में प्रायः भाग्योदय होता हैं। धन की रक्षा के लिए प्रायः अदालतो के चक्कर काटते रहना पड़ता हैं। शत्रु जो भी होंगे वे स्थायित्व ग्रहण करेंगे। पति–पत्नी में वैमनस्यता बनी रहती हैं। भाई–बहनों की बहुलता बनी हैं। परस्पर भाई–बहनों से प्रेम नहीं रह पाता व आपके साथ सैतेला सा व्यवहार रहता हैं। पिता सें वैचारिक मद–भेद रहता हैं।

व्यक्ति शांति प्रिय, एकांत प्रिय, विद्या, संगीत व अन्य कलाओं के प्रमी होते हैं। किसी बात का निर्णय देर से लेते हैं विलम्बतावश लाभ की मात्रा कम हो जाती हैं। थोड़ी सी सफलता सें प्रसन्न व कुछ ही असफलता अत्यंत दुखी कर जाती हैं। विचार निरंतर बदलते रहते हैं। अतः किसी बात में लगनद्व परिश्रम, धैर्यपूर्वक लगे रहना आपके लिए संभव नहीं हैं। मध्यान्ह के पश्चात तथा अर्द्धरात्रि से पूर्व जन्में होतो पितृ सुख अल्प होता हैं। संतान विशेष से चिंता रहती हैं। कैटुंम्बिक जीवन अस्त–व्यस्त रहता हैं। मस्से की प्रायः तकलीफ रह सकती हैं। किसी संबंधी की आकस्मिक मृत्यु या विवाह सें अवश्य धन की प्राप्ति होती हैं। मध्यावस्था में पद हानी की संभावना बनी रहती हैं।

व्यक्ति अपनी आत्मिक शक्ति को नियंत्रण में लाए तो अवश्य खूब नाम, यश, धन पैदा कर सकते हैं। अन्यथा बेचैनी तथा मुसीबतों का सामना करना पड़ता हैं। मन में जो भी विचार आएं उसी को पक्का समझकर उसके अनुरूप कार्य करने से हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती हैं। धन के लालची नहीं होते, अतः जीवन में बार–बार उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ता हैं। भाग्योदय प्रायः 30 वर्ष की आयु के बाद होता हैं। 15 से 18 वर्ष की आयु तक आनंद व मनोरंजन सें व्यतीत करते हैं। 21 से 32 वर्ष की आयु तक विभिन्न प्रकार के खतरे तथा का सामना करना पड़ता हैं। उसके बादका जीवन सुख व शांतिपूर्वक व्यतीत होता हैं। विवाहित जीवन में कठिनाईयो का सामना करना होता हैं।

हरा, भूरा, पीला, हल्का नीला व मिश्रित रंग लाभदायक होते हैं। शुक्रवर 6,15,24 तारीख लाभदायक होती हैं। 6,15,24,33,42,51,60,69 वें वर्ष लाभदायक होते हैं।

14 नवम्बर से 14 दिसम्बर

प्रथम सप्ताह में तुला अयन का थोडा प्रभाव बना रहता हैं। अतः वृश्चिक अयन अपना पूरा प्रभाव नहीं दिखा पाता। व्यक्ति बुद्धिमान, आदर्शवादी, धैर्यवान, धार्मिक विचारों युक्त, उत्साही, दृढ़ इच्छाशक्ति संपन्न परंतु क्रोधी व चंचल स्वभाव के होते हैं। भय के कार्यो में हाथ डालने से नहीं झिझकते और एक बार किसी से रूष्ट जाने पर क्षमा करना नहीं जानते। उपर से शांत दिखते हैं पर बदला लेने की भावना मन में धर किए रहती हैं। अवसर मिलने ही परिणाम की परवाह किए बिना अपने शत्रु को हानि पहुंचाने का प्रयास करते हैं। अपने शत्रु को अपने व्यक्तित्व के बल परही दबा लेते हैं। विरासत में धन लाभ होता हैं। भाई व संतान की संख्या अल्प होती हैं। पिता के पद व भाग्य को हानि होती हैं। अपनी वाणी के प्रभाव से लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर सकते हैं। संगति के अनुरूप अच्छे या बुरे क्षेत्र में तरक्की करते हैं।

व्यक्ति में कामुकता व विलासी प्रवृत्ति की प्रधानता रहती हैं। जीवन के दोहरा होता हैं। सार्वजनिक रूप में स्वयं को संयमी व त्यागपूर्ण प्रदर्शित करते हैं, पर धर के भीतर का जीवन विलासपूर्ण होता हैं। अपने जीवन के दोनों रूपों को एक दूसरे से अलग रखने में कुशल होते हैं। अतः अपकी विलासपूर्ण आदतों के संबंध में बाहरी लोगों को प्रायः कुछ भी पता नहीं चलपाता। कला संबंधि व्यवसाय में खूब यश अधिक फैलता हैं व स्थायी रहता हैं। देर–सवेर आपका झुकाव गुप्त विचारों की ओर भी हो जाता हैं। सूक्ष्मदर्शी व तत्वदर्शी के कारण भविष्यवाणीयां प्रायः सत्य होती हैं। शारीरिक व प्राकृतिक सौंदर्य के प्रेमी होते हैं। 18 वर्ष की आयु तक आप धार्मिक विचारों में रहते हैं। पर उसके बाद धर्म में आपकी आस्था कम हो जाती हैं। उच्च कोटि के काम को करने वाले जन सेवक। लेखक या भाषण कला में दक्ष व प्रसिद्ध होते हैं। 40 वर्ष आयु तक आते–आते भाग्योदय हो जाता हैं व उच्च पद को प्राप्त कर लेते हैं। 7 सें 14 वर्ष आयु के मध्य स्वास्थ्य मथा स्वभाव के संबंध में विशेष घ्यान देना चाहिए। 28 सें 30 वर्ष की आयु मध्य धन तथा यश की प्राप्ति होती हैं। 45 से 54 वर्ष के मध्य स्वास्थ्य कमजोर रहता हैं। ज्वर, सिरदर्द, स्नायुरोग, कण्ठ, मूत्राशय, छाती या फेफड़े संबंधी रोग, कमर के नीचे के भाग में रोग होने की अधिक संभावना रहती हैं। महिला को गर्भाशय संबंधि रोग होते हैं। मध्यावस्था में कड़ी बीमारी का सामना करना पड़ता हैं। प्रारंभिक जीवन संधर्षमय रहता हैं। उच्च लोगो की सदैव कृपा मिलती हैं।

मंगल व बुधवार शुभ रहते हैं। पीला, भूरा, लाल, हरा, नीला व नारंगी रंग शुभ होते हैं। रत्न में पुखराज, मूंगा, पन्ना शुभत्व प्रदान करते हैं। 9,18,27 तारीख 18,27,36,45,54,63,72 वर्ष भाग्यवर्धक होते हैं।

15 दिसम्बर सें 13 जनवरी

प्रथम सप्ताह में वृश्चिक अयन का थोडा प्रभाव बना रहता हैं। अतः धनु अयन अपना पूरा प्रभाव नहीं दिखा पाता। व्यक्ति साहसी, दृढ़ विचारवाले, धुन के पक्के, जोशीले तथा स्पष्टवक्ता होते हैं। पूर्ण निर्णायक विचार रखने वाले व लगनशील होते है जिसके कारण ये अपने कार्यो में सफलता प्राप्त करते हैं। व्यक्ति ज्ञान, धर्म व राजनीति के ज्ञाता, कार्यकुशल, तर्कशील, सतत क्रियाशील, सर्वकार्य दक्ष, न्यायप्रिय, शान–शौकत से जीवन व्यतीत करने वाले, यश की प्रबल इच्छा रखते हैं। क्रोध इन्हें शीध्र आता हैं व शीध्र शांत हो जाता हैं। स्वतन्त्रता प्रमी, अध्ययन प्रेमी अस्थिर विचार युक्त होते हैं। पिता को आर्थिक हानीं होती हैं। स्वयं के परिश्रम से भाग्योदय होता हैं। भाईयो से सुख की न्युनतम रहती हैं। संभवतः दो या दो से अधिक विवाह होता हैं। एक से अधिक आय के उपाय करने की क्षमता आपमें होती हैं, पर उनमें बाधाएं होती रहती हैं। 32 वर्ष तक की अवस्था घातक रहती हैं। मित्र एवं संबंधि जान प्रायः विश्वासघाती होते हैं। आपके साथ काम करने वालो के प्रति दयालु व उदार रहते हैं। मन की एकाग्रता उन्नतिपूर्ण होती हैं। हर कार्य में आपको सफलता मिलती हैं। आपकी भविष्यवाणीयां प्रायः सत्य होती हैं। जीवन में ऊंचे स्थान से दुर्धटना की संभावना रहती हैं। कान या फेफड़े के रोग,गठिया, लकवा, रक्त विकार आदि बीमारियां ओर जांध, पांव पर चोट का भय रहता हैं।

हंसमुख मिलनसार व मजाकिया होने के कारण संपर्क में आया व्यक्ति मित्र व प्रशंसक बन जाता हैं। धनी, चतुर, यशस्वी, धार्मिक, अस्त्र–शस्त्र विद्या में निपुण होते हैं। 14 से 29, 35 से 42, 56 से 63 वर्ष की आयु के मध्य स्वास्थ्य हानी होती हैं। 28 से 35, 42 से 48, 56 से 65 वर्ष भाग्योदय के लिए श्रेष्ठतम रहता हैं। गुरूवार विशेष शुभ रहता हैं। नीला, हरा, पीला, काला रंग शुभदायक होते हैं। 3,12,21,30 तारीख शुभ होती है। 12,21,30, 39,48,57,66,75 वें वर्ष शुभ होते हैं।

14 जनवरी से 13 फरवरी

प्रथम सप्ताह में धनु अयन का थोडा प्रभाव बना रहता हैं। अतः मकर अयन अपना पूरा प्रभाव नहीं दिखा पाता। व्यक्ति अपने भाग्य के स्वयं नियामक होते हैं तथा उपार्जित धन कभी नष्ट नहीं करते। उत्साही व परिश्रम का विशेष गुण होता हैं। उत्साह के साथ झगड़ालू भी होते हैं। संग्रह करने की बलवती प्रवृति होती हैं। व्यवसायीक बुद्धि, प्रबल इच्छाशक्ति से अपने कार्य में सफलता प्राप्त करते हैं। क्रोध देर से आता हैं, व शांत भी देर से होता हैं। सत्यवादी, उच्च विचार, कष्ट सहने वाले, निर्णय कुशल, स्वतंत्र प्रकृति के होते हैं। किसी के अधिन रहकर काम करना पसंद नहीं आता, सदैव किसी को अधिन रख कर जीना पसंद करते हैं। समय के पाबंद गंभीर प्रकृति के होते हैं। मित्रता स्थायी नहीं रहती हैं। भाई–बहन कम होंगे उनसे लाभ की बजाय हानी की भी संभावना रहती हैं। पिता ओर पारिवारीक असंतोष बना रहता हैं। प्रारंभिक जीवन रोग व कष्टमय व्यतीत होता हैं। वातव्याधि से सदैव पीड़ा मिलती हैं। हाथ–पैर या जोड़ों में गठिया का या वायु के कारण पाचन शक्ति में गड़बड़ी रहती हैं। स्पस्ट वक्ता होने के कारण कई शत्रु बन जायेंगे। अधीरता आपका अवगुण होता हैं। परोपकार में कहीं अधिक धन खर्च करते हैं। अपनी गृहस्थी के कारण अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं। प्रेम के मामलों में आप का स्वाभाव लज्जायुक्त होता हैं, प्रेम पात्र से खुलकर बात नहीं कर सकते। परिवार को ऊंचा उठाने में सतत प्रयत्नशील रहते हैं।

व्यक्ति में उदारता न के बरा–बर होती हैं। अल्पधनी व व्यवसाय करने वाला, लोभ की अधिकता होती हैं, अनेक कार्यो में फसने वाले होते हैं। हल्का भूरा, हरा, काला, खाखी व लाल रंग शुभता प्रदान करते हैं। शुक्र व शनीवार शुभ होते हैं। 8,17,26 तारीख शुभ होती हैं। 8,17,26,35,44,53,62,71 वें वर्ष शुभता प्रदान करते हैं।

14 फरवरी से 13 मार्च

प्रथम सप्ताह में मकर अयन का थोडा प्रभाव बना रहता हैं। अतः कुंभ अयन अपना पूरा प्रभाव नहीं दिखा पाता। व्यक्ति मिलनसार मधुर भाषी, उत्साही, कामुक, सुंदर, कलाओं का जानकार होता हैं, ओर इसमें सफलता भी मिलती हैं। एकांत प्रेमी, धैर्यवान, ईमानदार, परिश्रती, दृढ़ निश्चयी होते हैं। एक ओर मित्र खूब होते हैं वहीं गुप्त शत्रुओं की भी बहुलता बनी रहती हैं। गुप्त शत्रु आपके विरूद्ध षड्यंत्र रचते रहते हैं इससे जमीन, जायदाद, संपति की हानी उठानी पड़ती हैं। लेखन कुशल, सादगी पूर्ण, व्यवहार व ईमानदार होते हैं।यात्राओं से प्रायः धन व स्वास्थ्य की भी हानि उठानी पड़ती हैं, यात्राओं में पानी, शस्त्र या पशु के कारण दुर्घटना होती हैं। अचानक धन नाश के योग बनते रहते हैं। क्रोध स्थायित्व ग्रहण नहीं करता हैं। कभी–कभी क्राध आने पर बदले की भावना मरते समय तक दिल से नहीं निकलती। कार्य में तर्क की अपेक्षा इच्छा शक्ति की प्रधानता रहती हैं।

भाग्योदय में निरंतर उतार चढ़ाव आते रहते हैं। उन्नति के लिए नये मार्ग ढूंढते हैं। स्वभव विश्वासी व धोखे से दूर होता हैं। अपने निश्चय पर अटल नहीं रह सकते हैं। सार्वजनीक कार्यो में बढ़ चढ़कर भाग लेते हैं। पर आलस्य व आरामतलबी प्रमुख दुर्गुण होता हैं। जब तक सिर पर न आए तब तक कोई कार्य नहीं करते हैं। धनिक धर में जन्म लेने पर जरा भी परिश्रम करना पसंद नहीं करते। अपनी योग्यता का प्रदर्शन तब करते हैं जब तक करना अत्यंत आवश्यक नहीं हो जाता। समय का लाभ नहीं उठा सकते। अपनी इच्छा से विपरीत छोटी से छोटी बात या काम को बेखकर खूब दुःखी या परेशान होते हैं। कभी दुर्व्यसनों में फंस जाता हैं। स्वतंत्र स्वभाव के निजी व्यवसाय या काम में उच्च पद पर प्रतिष्ठित होकर अपनी कार्य कुशलता को भली प्रकार प्रदर्शित कर सकते हैं। भोजन की अनियमितता से पेट,फेफड़े, मूत्राशय, कान, आंख की बीतारी होने की अधिक संभावना होती हैं। धुटने व पीठ पर चोट व मोच से पीड़ा पहुचती हैं।

शनीवार शुभत्व प्रदान करता हैं। भूरा, सफेद, हरा व काला शुभ होता हैं। 8,17,26 तारीख शुभ होती हैं। 8,17,26,35,44,53,62,71 वें वर्ष शुभता प्रदान करते हैं।

14 मार्च से 12 अप्रैल

प्रथम सप्ताह में कुंभ अयन का थोडा प्रभाव बना रहता हैं। अतः मीन अयन अपना पूरा प्रभाव नहीं दिखा पाता। व्यक्ति कला के कारण यत्र–तत्र सर्वत्र यश–खयाति प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं। विशेष प्रकार की महत्वाकांक्षा से बेचैनी के कारण प्रायः स्वयं अपने आप की आलोचना करते हैं व अपने विचारों में निरंतर परिवर्तन करते रहते हैं। विलासी, कामुक, प्रदर्शन प्रिय, मनोरंजन प्रिय, स्वाभिमानी, मिलनसार, गोपनीय भेदमुक्त, परिश्रमी, देव गुरू अतिथि प्रेमी, वार्तालाप दक्ष, लेखन व अध्ययन में विशेष रूचि रखने वाले होते हैं। परोपकारी व क्षमाशील अपने परिवार के अतिरिक्त अपने संपर्क में आए हर व्यक्ति को सुख पहुंचाते हैं। बड़ी से बड़ी विपत्ति में भी धैर्य नहीं छोड़ते। जीवन के प्रति स्वप्नदृष्टा बना हवाई किले बनाते रहते हैं। खूब सोचते हैं एवं एक साथ अनेक कार्य आरंभ करते हैं और प्रायः असफल हो जाते हैं। दूसरों की सलाह पसंद नहीं आती, फलतः उससे हानि उठाते हैं। कार्य के प्रति शीध्र उत्साह छोड़ देते है व सफलता एकाएक असफलता में बदल जाती हैं। यात्राओं से धन लाभ होता हैं। विवाह एक से अधिक संभव! गुप्तांगो में रोग की संभावना बनी रहती हैं। दुःस्वप्न आते हैं। ज्ञान स्वअर्जित व विचारों को खुलकर के प्रकट करते हैं। दूसरो के विचारों का आदर करते हैं। प्रेम संबंधों में प्रायः सफलता मिलती हैं। स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहता हैं। जमीन जायदाद को लेकर मुकदमेबाजी में फंसते हैं। छोटी अवस्था में ही आयका साधन बना लेते हैं। रक्त विकार, अनिद्रा, उदर विकार, सिरदर्द, नेत्र रोग पीड़ित रहते हैं। 12 से 21, 32 से 45 वर्षायु का समय जीवन श्रेष्ठतम होता हैं।

गुरूवार विशेष शुभ रहता हैं। नीला, हरा, पीला, काला रंग शुभदायक होते हैं। 3,12,21,30 तारीख शुभ होती हैं। 12,21,30, 39,48,57,66,75 वें वर्ष शुभ होते हैं।

GURUTVA KARYALAY

MB-28, BADAGADA BRIT COLONY
BHUBANESWAR (ORISSA)
INDIA, PIN- 751 018
Call- 91+ 9338213418, 91+ 9238328785
Email:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in
gurutva_karyalay@yahoo.in
gurutva.karyalay@gmail.com

Web:- http://gk.yolasite.com/
http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

Note:- हम ज्योति विज्ञान, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र एवं तंत्र से सम्बंधित जानकारी मुफ्त मे प्रदान कर गैर लाभ संगठनों के वाणिज्यिक इस्तेमाल हेतु एवं मात्र व्यक्ति गत स्तर पर इस्तेमाल करने हेतु दे रहे है. कोइभी व्यक्ति हमारे लेख और जानकारी सम्बंधित मुद्दो पर किसी भी प्रकार का विवाद नही कर सकते. हमारे सभी लेख सिर्फ हमारे दोस्त, रिश्तेदार और परिचित लोगो के उपयोग एवं लाभ के उद्देश्य के लिए दिये गये हैं .
(सभी केवल विवादों विषय भुवनेश्वर न्याय क्षेत्र ही मान्य होग)